शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-३ अंक-६

माह : दिसम्बर २०२०

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाएं,

बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-३
अंक-६

माह- दिसम्बर २०२०

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन
प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
ज्योति कुमारी
आनन्द मिश्रा

सह सम्पादक
डॉ0 अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

शिक्षा वर्ष प्रतिवर्ष कक्षोन्नति का साधन नहीं है अपितु पल प्रतिपल सभ्य और सुसंस्कृत होने का मार्ग है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि बालक विद्यालय में खानापूर्ति करके घर नहीं जा रहा है। अपितु प्रतिदिन कुछ ऐसा सीखकर जा रहा है जो उसके व्यक्तित्व में सकारात्मक बदलाव ला रहा है। यदि कोई बालक विद्यालयी शिक्षा के बाद असभ्य और असामाजिक तत्वों में रम जाता है तब निश्चित ही माना जाएगा कि उसकी शिक्षा व्यर्थ चली गयी। इसलिए विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे उनका व्यक्तित्व प्रकाशवान हो। वे न सिर्फ स्वयं को बल्कि अपने आसपास के परिवेश में भी प्रकाश फैलाएँ।

मिशन शिक्षण संवाद के क्रियाकलापों को देखकर जाना कि पाठ्यक्रम से जुड़े सन्दर्भों पर कार्य करने के साथ–साथ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर भी ध्यान दिया जा रहा है। दैनिक श्यामपट्ट कार्य जैसे प्रयासों के माध्यम से प्रतिदिन एक नया सुविचार विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा रहा है और बच्चे उनका संकलन भी कर रहे हैं जोकि अत्यंत लाभदायक है। चिर अंतराल में ये चीजें बच्चों पर बहुत असर डालती हैं। पता नहीं कब कौन सा बच्चा कहाँ निकल जाए और देश का नाम रोशन करे।

मिशन शिक्षण संवाद प्रतिमाह एक पत्रिका का ऑनलाइन प्रकाशन भी कर रहा है जोकि शिक्षक समाज के लिए बहुत उपयोगी है। शिक्षकों के लिए प्रकाशित होने वाली ऐसी नियमित शैक्षिक पत्रिकाओं का अभाव है। ऐसे में मिशन शिक्षण संवाद की इस पहल का सम्मान करता हूँ और आगामी अंक के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

श्री राकेश शुक्ला
जिला समन्वयक प्रशिक्षण
जनपद हरदोई

मिशन शिक्षण संवाद

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

जिस तरह हम मनुष्य अपने जीवन में अपनी शक्ति के अनुसार उपयोगी और अनुपयोगी विषय वस्तु का परीक्षण कर उसे हटाते रहते हैं। ठीक इसी तरह प्रकृति भी हम सभी जीवों का परीक्षण करती रहती है। फिर चाहे वह अनुकूल – सुख का समय हो अथवा प्रतिकूल–दुख का समय हो। दोनों ही परिस्थितियों में हम मानवों की प्रकृति परीक्षा लेती है। प्रकृति अपने परीक्षण में देखती है कि मानव में अनुकूल अथवा प्रतिकूल समय में कितना धैर्य है। कहीं सुख में पागल होकर प्रकृति को प्रदूषित तो नहीं कर रहा है अथवा दुख में दुखी होकर प्रकृति पर प्रहार तो नहीं कर रहा है। इसी परीक्षण में प्रकृति अपने विभिन्न रूपों का दर्शन हम सभी मानवों को कराती रहती है। उसी का एक रूप हम सभी को एक वाइरस के रूप में वर्ष–2020 में देखने को मिला। जिसने अदृश्य होकर भी सम्पूर्ण विश्व को अपनी उपस्थिति का अहसास करा दिया। जिसने धैर्य के साथ प्रकृति के परीक्षण को पास किया। वह आज भी प्रकृति के साथ है अन्यथा साफ है।।

मिशन शिक्षण संवाद परिवार भी सदैव प्रकृति के प्राकृतिक सिद्धान्तों धैर्य, प्रेम और विश्वास के साथ शिक्षा के उत्थान से मानवता के कल्याण के लिए समर्पित रहता है। यही कारण रहा कि जब वर्ष– 2020 की महामारी काल में शिक्षा के लिए सभी जगह दरवाजे बन्द हो रहे थे ऐसे समय में भी मिशन शिक्षण संवाद परिवार ने आप सभी के सहयोग, संवाद और समर्पण से अपनी उपयोगिता को सिद्ध कर ''शिक्षण संवाद'' सतत जारी रखा।

आशा है ऐसा ही धैर्य और विश्वास सदैव हर परिस्थिति में बनाये रखेंगे तथा प्रकृति की प्रत्येक परीक्षा में पास होकर भविष्य के मानवता के पथ को सशक्त, सुखी और सकारात्मक बनायेंगे।

मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से आप सभी को गतवर्ष – 2020 के सहयोग के लिए बहुत–बहुत आभार एवं नववर्ष–2021के लिए बहुत–बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ!

धन्यवाद

आपका

विमल कुमार

टीम मिशन शिक्षण संवाद

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति–1	7–8
मिशन गीत	9
नई उड़ान	10
टी.एल.एम.संसार	11–13
English Medium Diary	14
प्रेरक प्रसंग	15
सदविचार	16
बाल कविता–1	17
बाल कविता–2	18
बाल कविता–3	19
बाल कहानी	20
बाल साहित्य	21
बात महिला शिक्षकों की	22
योग विशेष	23
खेल विशेष	24
अनमोल बाल रत्न	25
शिक्षण तकनीक	26
काशी कार्यशाला	27–31

विचारशक्ति

जागो अभिभावक जागो

शिक्षण संवाद

शिक्षा जीवन का आधार होती है। शिक्षा हमें जीवन जीने की कला प्रदान करती है। शिक्षाविदों ने शिक्षा को अलग–अलग तरह से परिभाषित किया। लेकिन सबने स्वीकार किया कि शिक्षा बालक का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करती है और उसे भविष्य के लिये तैयार करती है।

जब बात शिक्षा की आती है तो हमें शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम, स्कूल और कक्षा याद आती है जिसमें प्रमुख स्थान शिक्षक का होता है। शिक्षक अपने छात्रों को सभी विषयों का ज्ञान प्रदान करते हैं और उन्हें सुनहरे भविष्य के लिये गढ़ने का कार्य करते हैं।

जॉन डीवी ने शिक्षा को त्रिमुखी प्रक्रिया कहा था जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम को स्थान दिया। पाठ्यक्रम का महत्व है किन्तु शिक्षा सिर्फ ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है। ज्ञान तो कई माध्यमों से प्राप्त किया जा सकता है। विषयवस्तु तो किताबों, गूगल और समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में भरी पड़ी है। शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी शिक्षा त्रिमुखी प्रक्रिया ही है यह बात मैं स्वीकार करता हूँ। मेरे अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया के प्रमुख अंग शिक्षक, शिक्षार्थी और अभिभावक है।

शिक्षक अपने शिक्षार्थियों के चहुँमुखी विकास हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। शिक्षार्थी भी अपने गुरूजन की बतायी बातों का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र तब भ्रमित हो जाते हैं। जब उन्हें शिक्षक पढ़ा कुछ रहे हैं और उन्हें उस ज्ञान का बिल्कुल उल्टा परिदृश्य समाज और घर में देखने को मिलता है।

शिक्षक ने स्कूल में महात्मा गांधी नामक पाठ पढ़ाते हुए कहा कि बच्चों! हमें सदैव सत्य बोलना चाहिये। बच्चा घर जाता है तभी मकान मालिक किराया लेने आ जाता है। वह जाकर अपने पिता से बताता है। उसके पिता घर पर ही होते हैं किन्तु बेटे से कहते हैं कि उनसे कह दो कि मैं घर पर नहीं हूँ।

अगले दिन शिक्षक राजकुमार सिद्धार्थ का पाठ पढ़ाते हुये कहते हैं कि हमे जीवों पर दया करनी चाहिये। बच्चा घर जा रहा होता है तब उसकी निगाह पड़ती है कि उसका पड़ोसी अपनी भैंस पर लट्ठ बरसा रहा होता है। बच्चा घर जाकर कहता है कि मैं स्कूल नही जाऊँगा क्योंकि वहाँ सब गलत पढ़ाया जाता है। अभिभावक बच्चों को स्कूल भेजकर खुद फुर्सत में हो जाते हैं। ये बिल्कुल भी सही नहीं है। विद्यालय में बच्चा आकर अच्छी आदतें और बातें सीखता है किन्तु वो बातें और ज्ञान सत्य और प्रामाणिक हैं इसका सत्यापन वह अपने घर व समाज में करने का प्रयास करता है। इसलिये गुरु द्वारा दिये गये ज्ञान पर मुहर लगाने का कार्य अभिभावकों को करना चाहिए। निश्चित रूप से शिक्षक बच्चों को हर सम्भव जानकारी, ज्ञान और संस्कार देने का प्रयास करते हैं किन्तु अभिभावकों को भी सहयोग करना चाहिए।

ईश्वर ने सबको दो आँखे प्रदान कीं। एक से चित्र और दूसरे से अंक और अक्षर का दर्शन होता है। माँ प्रथम शिक्षिका होती है जो चित्रों, वस्तुओं और अपनी आँखों से बच्चे को

दुनिया दिखाने की कोशिश करती है। दूसरी तरफ शिक्षक चित्र, अंक और अक्षर के माध्यम से बच्चों के सामने पूरे ब्रम्हाण्ड को प्रकट कर देता है। कोई भी ज्ञान हो संस्कार हो उसकी शुरुआत घर से ही होती है।

बच्चों में शिक्षा द्वारा संस्कार गढ़ने का कार्य शिक्षक द्वारा किया जाता है। बच्चे में यदि कोई बुरी आदत दिखायी पड़ती है तो शिक्षक उसे दूर करने का प्रयास करते हैं। समाज की बुराईयाँ बच्चों में न पनपने पाये इसलिये शिक्षक उनके सामने प्रेरक प्रसंग और महापुरुषों की गाथा गाकर उन्हें पथभ्रष्ट होने से बचाकर उन्हें अच्छा नागरिक बनाने का प्रयास करते हैं। बच्चों को विद्यालय से अच्छी बातें, अपार ज्ञान और अनन्त जानकारी अवश्य ही मिल सकती है। शिक्षक उन्हें जीवन के लिये तैयार तो करते हैं किन्तु संस्कारों का निर्माण अभिभावकों के सहयोग के बिना सम्भव नहीं है।

अभिभावक अपने बच्चों के ज्ञान में वृद्धि के लिये अनेक उपाय अपना लेते हैं किन्तु अपने मुख्य उत्तरदायित्व से बचते रहते हैं। आपको भी अपने बच्चों के सामने खुद को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। बच्चे पढ़ लिख जाएँ और अच्छी नौकरी पा लें। यह ही आपका उददेश्य नही होना चाहिए। आजकल पढे–लिखे युवा गैर सामाजिक कार्यों मे संलिप्त हो रहे हैं। इस पर विचार करें आखिर क्यों ऐसा उनके द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने ज्ञान का अर्जन तो कर लिया किन्तु संस्कारों की कमी बनी रही जिसके जिम्मेदार सिर्फ अभिभावक ही हैं। विद्यालय में शिक्षकों द्वारा बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा प्रदान की जाती है किन्तु वह जब घर और समाज में उसके इतर माहौल देखता है तो संस्कार पीछे छूट जाते हैं। बच्चों में संस्कारों की कमी भयावह स्थिति बन चुकी है। इस पर विराम लगना आवश्यक है।

इसलिये अभिभावकों को अपने दायित्व को समझना होगा। अभिभावक अपने बच्चों के लिये, उनके सुनहरे भविष्य के लिये शिक्षकों का सहयोग करे। अभिभावक बच्चों के सामने झूठ न बोलें, धूम्रपान न करें, अहिंसात्मक कृत्य न करें और न ही असामाजिक कार्यों में संलिप्त हों। बल्कि अपने बच्चों का नियमित अवलोकन करें, शिक्षकों के सम्पर्क में रहें और अपने बच्चों को घर में अच्छा वातावरण प्रदान करें ताकि उनमें ज्ञान वृद्धि के साथ संस्कारों का निर्माण हो सके।

शिक्षक अपने शिक्षार्थी की उन्नति हेतु अनेक शिक्षण विधियों, नवाचार व प्रेरक प्रसंगों द्वारा उनके ज्ञान की वृद्धि हेतु सदैव ही तत्पर रहते हैं। किन्तु अब बदलते परिवेश में यह नितान्त आवश्यक हो गया है कि अभिभावक अपने बच्चों के लिये स्वयं भी आदर्श प्रस्तुत करें। बच्चों में संस्कारों का सृजन शिक्षक व अभिभावक के संयुक्त प्रयासों द्वारा ही सम्भव है। हमारा दायित्व है कि यह संदेश अभिभावकों तक जरूर पहुँचे।

शिक्षक वैज्ञानिक ढंग से बच्चों को ज्ञान प्रदान करते हुये उनमें पनप रही बुराईयों का अन्त करने का प्रयास करते हैं और अभिभावकों को चाहिए कि वे शिक्षक द्वारा प्रदत्त ज्ञान पर अपनी मुहर लगाएँ ताकि बच्चा उसे अपने जीवन में उतार कर सुनहरे भविष्य की ओर बढ़ चले।

अभिषेक शुक्ला,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय लदपुरा,
विकास खण्ड–अमरिया,
जनपद–पीलीभीत।

मिशन शिक्षण संवाद हमारा

अरविन्द कुमार सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय धवकलगंज,
विकास खण्ड–बड़ागाँव,
जनपद–वाराणसी।

कभी न टूटे बना रहे ये,
दृढ़ संकल्प हमारा।
मिशन शिक्षण संवाद की ज्योति,
फैले जग सारा। हो फैले जग सारा।
कभी न टूटे.....

मिशन के संग–संग आओ,
हम सब हाथ बढ़ाएँ।
नन्हें–मुन्नों के भविष्य को,
हम सब सँवारते जाएँ।
दुखों में भी खुश रहना सीखें,
करें जगत को न्यारा।
मिशन शिक्षण.....

नवाचार का कर प्रयोग,
छात्रों को सब दे जाएँ।
राष्ट्र वीर और राष्ट्र के प्रहरी,
बनकर वो दिखलाएँ।
नहीं अछूता रहे कोई भी,
सब बन चमकें तारा।
मिशन शिक्षण.....

गणित, संस्कृत, अंग्रेजी,
विज्ञान का ज्ञान दे जाएँ।
नृत्य, कला, संगीत, संभाषण,
में उन्नत हो पाएँ।
पढ़–लिख छात्र हों ओजस्वी,
गूँजे जयहिंद का नारा।
मिशन शिक्षण.....

नयी उड़ान

मिशन शिक्षण संवाद समूह भर रहा नित नई उड़ान।
होगा शिक्षा का उत्थान, बढ़ेगा शिक्षक का सम्मान।।

शिक्षकों के विचारों को विचारशक्ति मंच दिया।
शिक्षकों ने मिलकर अपने विचारों को आकार दिया।।
मिलकर सभी ने बढ़ाया शिक्षा जगत का मान।
होगा शिक्षा का .....

ब्लॉगर, मासिक पत्रिका, काव्यांजलि का उदगार किया।
शिक्षकों ने स्वरचित शैक्षिक रचनाओं का भंडार दिया।।
बच्चों, अभिभावकों, समाज को किया जागरुक दिया ज्ञान।
होगा शिक्षा का.....

ऑनलाइन पढ़ाई सुचारू करने में सहयोग अपार दिया।
शिक्षकों ने ऑनलाइन कार्य का बच्चों तक प्रसार किया।।
घर– घर खुली पाठशाला, बच्चों को मिला शिक्षा ज्ञान।
होगा शिक्षा का.....

सभी के प्रयासों को सराहा, नया सवेरा वेबिनार दिया।
नए–नए शैक्षिक आयामों को स्वरूप साकार दिया।।
सभी में उत्साह भरा, शिक्षा जगत में डाली नई जान।
होगा शिक्षा का.....

नन्हीं चिड़िया का उदाहरण दे सकारात्मक विचार दिया।
व्यक्तिवाद को नहीं, समूहवाद को स्वीकार किया।
समूह ने एकजुटता से शिक्षा उत्थान में लगाया ध्यान।।
होगा शिक्षा का उत्थान, बढ़ेगा शिक्षक का सम्मान।
पढ़ेगा भारत, बढ़ेगा भारत, बढ़ेगा देश का मान।।

अद्भुत, अविस्मरणीय, ऐतिहासिक, बनारस
कार्यशाला का सफल आयोजन किया।
जन–जन के मन में उत्साहवर्धी प्रयासों का जागरण किया।
सकारात्मक ऊर्जा संचार कर समूह भर रहा नित नई उड़ान।
हो रहा शिक्षा का उत्थान, बढ़ रहा शिक्षक का सम्मान।।

रीना,
सहायक अध्यापक,
प्रा0 वि0 सालेहनगर,
विकास क्षेत्र–जानी,
जनपद–मेरठ।

जैसा की सबको विदित है कि नव वर्ष 2021 अब कुछ ही दिनो मे दस्तक देने वाला है तो इसी के अन्तर्गत हिन्दी की टी एल एम में मेरे द्वारा नववर्ष 2021 का तिथिपत्रक बनाया गया है, जिसमें मैंने सप्ताह में दिनों के नाम जैसे रविवार, सोमवार आदि वर्ष में माह के नाम जैसे जनवरी, फरवरी आदि एवं 1 से 31 तक तिथि को हिन्दी में लिखा है,

इस तिथिपत्रक की थीम को भारतीय लोकनृत्य पर रखा गया है।

इस तिथिपत्रक के सीखने के प्रतिफल हैं–

1) बच्चे हिन्दी में दिनों के नाम पढ़ना व लिखना सीखें।
2) बच्चे हिन्दी में माह के नाम पढ़ना व लिखना सीखें।
3) बच्चे 1 से 31 तक हिन्दी की गिनती पढ़ना व लिखना सीखें।
4) बच्चे विभिन्न राज्यों मे होने वाले भारतीय लोक नृत्यों से परिचित हों।

प्रतिभा यादव,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय चौरादेव,
विकास खण्ड–पुवॉरका,
जनपद–सहारनपुर।

टीएलएम का नाम- पूर्णांक बोर्ड

counting box

शिक्षण संवाद

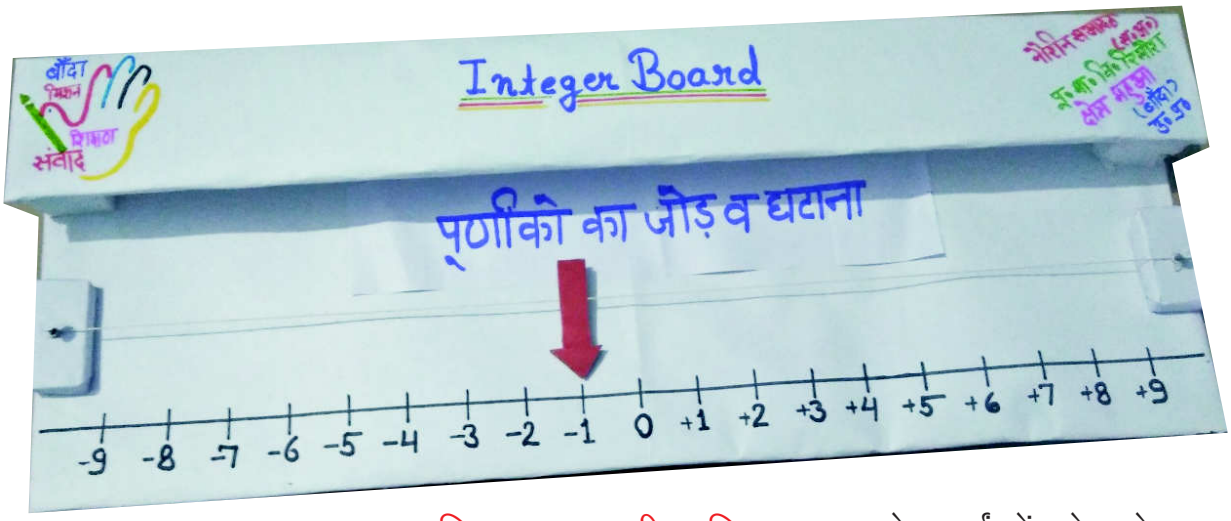

शिक्षण सम्बन्धी परिणाम– बच्चे पूर्णांकों के जोड़ तथा घटाव से सम्बन्धित समस्याओं को हल कर लेते हैं।

आवश्यक सामग्री– दफ्ती, रंगीन मार्कर, पेन, धागा, दो कील, पटरी, पेन्सिल, रबर व फेवीकोल।

बनाने की विधि– दफ्ती का एक आयताकार टुकड़ा लेंगे। उस पर सफेद चार्ट से कवर चढ़ा देंगे। दफ्ती को बीच में दोनों किनारों पर दो कील व धागे में एक संकेतक डालकर फेवीकोल की सहायता से चिपका देंगे। यह संकेतक धागे पर आगे पीछे सरकेगा। दफ्ती के एक सिरे पर संख्या रेखा अंकित कर देंगे व उस पर **TLM** का नाम पूर्णांक बोर्ड (**INTEGER BOARD**) अंकित कर देंगे। इस प्रकार पूर्णांक बोर्ड तैयार है।

टीएलएम के लाभ– इस टीएलएम की सहायता से बच्चे संख्या रेखा पहचान लेते हैं। संख्या रेखा पर जोड़ व घटाना आसानी से कर लेते हैं। ऋण व धन पूर्णांकों का जोड़ घटाना आसानी से कर लेते हैं।

नौरीन सआदत,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय रिसौरा,
विकास खण्ड–महुआ,
जनपद–बाँदा।

मोबाइल लाइब्रेरी

चित्रकारी पर कदमचाल

शिक्षण संवाद

जैसा कि हम सब जानते हैं कि कोरोना महामारी ने सबसे ज्यादा नुकसान बच्चों की शिक्षा का किया है। एक दिन मैंने बच्चों को खिलौने वाले को घेरे देखा। आँखों में उनके एक चमक थी और वो साइकिल में टँगे खिलौने निहार रहे थे। वहीं से मुझे विचार आया कि क्यों न हम अपने स्कूल की लाइब्रेरी की किताबों को ऐसे ही बच्चों तक ले जाएँ क्योकि कहानियाँ पढ़ना तो बच्चों को बहुत ही प्रिय होती है।

विधि– इस नवाचार के लिए हमने बाँस की लकड़ियों का एक ढाँचा बनाया तथा उसमें तार की डोरियाँ बनाईं और उसे साइकिल पर बाँधा। तार की डोरियों पर किताबें टाँगीं और बच्चों को आकर्षित करने के लिए सीटी जिसे बजाने से बच्चे दूर से ही जान जाते हैं कि उनकी मोबाइल लाइब्रेरी आ गई। बच्चे अपनी पसंद की किताबें चुनते हैं और लाइब्रेरी रजिस्टर में अपना नाम अंकित कराते हैं। इसके पूर्व उनसे पिछली पढ़ी गई किताब के बारे में चर्चा करते हैं और पढ़ी गई कहानी को सुनाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

(लाभ)– इस नवाचार से लाभ ये है कि जो पुस्तकें विद्यालय की लाइब्रेरी में थीं। आज वो बच्चों के बीच हैं। अन्य लाभ निम्नवत हैं–

1– बच्चों में पुस्तकों के चुनाव करने की क्षमता का विकास।

2–बच्चे पढ़ी गई कहानी को अपने शब्दों में बता पाते हैं।

3–बच्चे स्थानीय कहानियों को भी सुनाते हैं जिससे स्थानीय शब्दों से अध्यापक भी परिचित हो पाते हैं।

4– सबके सामने कहानी सुनाने में बच्चों में आत्मविश्वास की वृद्धि होती है।

5–वर्तमान समय में विषय पर अधिक जोर न होने से लाइब्रेरी का उपयोग प्रभावी बनता है।

6– बच्चे पुस्तक पढ़ने भर तक नहीं, पुस्तक में लिखे भाव को समझ पाते हैं।

7– बच्चे कहानी के पात्रों की अच्छी बातों को अपने व्यवहार में ला पाते हैं।

8– बच्चे में कल्पनाशीलता की वृद्धि होती है।

9–बच्चे में कहानी सुनाने की क्षमता में वृद्धि होगी और आजकल कहानी सुनाना एक व्यवसाय भी है बच्चा भविष्य में इस कैरियर की तरफ भी जा सकता है।

10– भाषा के प्रेरणा लक्ष्य को प्राप्त करने में सुगमता होगी।

रवि शंकर,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय
जामिरा(अंग्रेजी माध्यम),
विकास खण्ड–मऊ,
जनपद–चित्रकूट।

English Medium Diary

HOW TO EASE TEACHING AND LEARNING ENGLISH

शिक्षण संवाद

COMIC

Alice in wonderland

"Imagination is the beginning of creation, you imagine what you desire,you will what you imagine and at last you create what you will".

-George Bernard Shaw.

Creativity is a valuable skill and a very good strategy teacher can use to help students develop it. Creativity always starts with imagination and history shows that many things we imagine are later actually created. One fruitful approach to enhance students creativity and boost up their moods is using comic strips. Comic allows teacher to act as a facilitators instead of leaders. Comic reading by students increases their thought power, vocabulary and writing skills too.

keeping all these things in mind. I tried my level best to create a comic from english book rainbow, class 5, lesson -"Alice in wonderland". I tried to make the theme of story with very attractive comic pictures and conversation among characters to increase curiosity of students and make the story much funnier for them.

Hope my students and readers find utmost fun reading in my comic.

Shilpi Upadhyay,
Assistant Teacher,
Primary School Biharigarh,
Block-Muzaffarabad,
District-Saharanpur.

प्रेरक प्रसंग

श्री रामानुजन

शिक्षण संवाद

महान गणितज्ञ श्री रामानुजन गणित के महानतम विचारकों में से एक थे। इन्होंने विश्लेषण एवं संख्या सिद्धान्त के क्षेत्रों में अपना गहन योगदान दिया था। रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर 1887 को कोयम्बटूर के ई रोड गाँव में हुआ था।

वैसे तो इनके जीवन के कई प्रेरक प्रसंग हैं लेकिन जब रामानुजन गाँव के प्राथमिक स्कूल में पढ़ते थे तो उस समय गुरु जी ने बच्चों से कहा कि आधे घंटे में एक से सौ तक की सब संख्याओं का जोड़ निकाल कर मुझे दिखाओ। उस समय बालक रामानुजन ने मात्र 10 मिनट में ही यह कार्य कर दिखाया। 7 साल के रामानुजन की प्रतिभा देख कर गुरु जी चकित रह गए।

श्री रामानुजन जब क्लर्क की नौकरी करते थे तब भी उन्हें गणित से इतना लगाव था कि उन्हें जब भी समय मिलता वे गणित के सवाल हल करते रहते। एक दिन उनके अधिकारी ने उन्हें यह करते हुए देख लिया। जाँच करने पर उनकी मेज से कई पन्ने निकले जो गणित के सूत्रों से भरे थे। अधिकारी ने उन्हें पढ़ा और उनसे प्रभावित होकर उन पन्नों को इंग्लैण्ड के महान गणितज्ञ प्रोफेसर हार्डी के पास भेज दिया। रामानुजन के कार्य को देखकर प्रोफेसर हार्डी दंग रह गए। प्रोफेसर हार्डी ने रामानुजन को इंग्लैण्ड बुलाया और उन्हें गणित के उच्च शोध कार्य में लगा दिया।

आगे चलकर यही रामानुजन महान गणितज्ञ के रूप में विश्व प्रसिद्ध हुए।

विनीत शर्मा,
इं० प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय केशोराय,
विकास खण्ड–टूण्डला,
जनपद–फिरोजाबाद।

सद्विचार

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

शिक्षण संवाद

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से थे और उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था। राष्ट्रपति होने के अतिरिक्त उन्होंने भारत के पहले मंत्रिमंडल में 1946 एवं 1947 में कृषि और खाद्यमंत्री का दायित्व भी निभाया था। सम्मान से उन्हें प्रायः 'राजेन्द्र बाबू' कहकर पुकारा जाता है।

26 जनवरी 1950 को भारत को गणतंत्र राष्ट्र का दर्जा मिलने के साथ ही राजेंद्र प्रसाद देश के प्रथम राष्ट्रपति बने। वर्ष 1957 में वे दोबारा राष्ट्रपति चुने गए। इस तरह वे भारत के एकमात्र राष्ट्रपति थे, जिन्होंने लगातार दो बार राष्ट्रपति पद प्राप्त किया था। उन्हें सन् 1962 में अपने राजनैतिक और सामाजिक योगदान के लिए भारत के सर्वश्रेष्ठ नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से भी नवाजा गया।

बाद में उन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया और अपना शेष जीवन पटना के निकट एक आश्रम में बिताया जहाँ 28 फरवरी, 1963 को बीमारी के कारण उन्होंने अपनी अंतिम साँस ली।

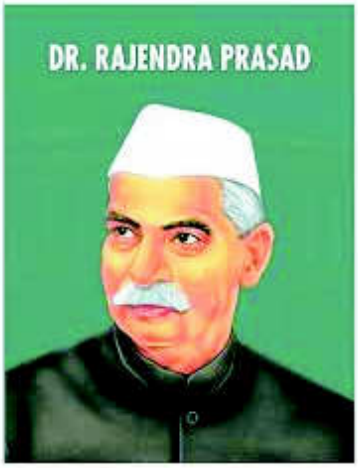

'सादा जीवन, उच्च विचार' के अपने सिद्धांत को अपनाने वाले डॉ0 राजेंद्र प्रसाद अपनी वाणी में हमेशा ही अमृत बनाए रखते थे। उनके कुछ सद्विचार निम्नलिखित हैं–

1. सबको अपनी उम्र के साथ सीखने के लिए खेलना चाहिए।
2. खुद पर उम्र को कभी हावी नहीं होने देना चाहिए।
3. मंजिल को पाने की दिशा में आगे बढ़ते हुए याद रहे कि मंजिल की ओर बढ़ता रास्ता भी उतना ही नेक हो। गलत मंशाएँ आपको किनारे नहीं लगा सकतीं।
4. जो बात सिद्धांत में गलत है, वह बात व्यवहार में भी सही नहीं है।
5. दिखावट और फ़िजूलख़र्ची अच्छे मनुष्यों का लक्षण नहीं वह चाहे कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो।
6. फिजूल खर्च करने वाला व्यक्ति, समाज का अपराधी है।

एक बार की बात है उनके सस्ते और खराब जूते को बदलने के लिए उनके निजी सचिव बाजार गये और अच्छा–सा मुलायम जूता 19 रुपये में खरीद लाए। उन्होंने सोचा था यह जूते उनके व्यक्तित्व के अनुरूप जँचेंगे, पर यहाँ तो उल्टी पड़ी, डॉ0 राजेंद्र प्रसाद की जी ने कहा– ''जब 11 रुपये वाले जूते से काम चल सकता है तो फिर 19 रुपये खर्च करने की क्या आवश्यकता है? मेरा पैर कड़ा जूता पहनने का अभ्यस्त है, आप इसे लौटा दीजिये।''

मिहिर यादव,
सहायक अध्यापक(विज्ञान),
कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय पाण्डेयपुर,
विकास खण्ड–मुंगराबादशाहपुर,
जनपद–जौनपुर

बच्चों का कोना

बाल कविता-1

स्कूल पढ़ने जाएँगे हम
देश को आगे बढ़ाएँगे, हम
स्कूल पढ़ने जाएँगे, हम।
हम तो ले चले बस्ते, सपनों के,
अरमां पूरे करने, अपनों के।
शिक्षा की कूँची से, भर दें रंग,
चलो, हम भी सीख लें जीने का
ढंग।
उड़ चलें स्कूल अपने पंखों से,
आशीष ले लें पहले अपनों से।
गुरु से पढ़ेंगे गणित और विज्ञान,
लौटकर लगायेंगे खेतों में धान।
पढ़ेंगे, खेलेंगे और करेंगे मस्ती,
हम भी पढ़कर बनेंगे, बड़ी हस्ती।
काम अधूरे न कभी मैं छोड़ूँगा,
शिक्षा से नाता, मैं कभी न तोड़ूँगा।
हम तो चले स्कूल, बाबा और मैया,
अपना स्कूल लगे, प्यारा हमें, भैया।
हर घर, हर गाँव, गर पढ़ेगा,
तभी तो इंडिया, आगे बढ़ेगा।
स्कूल पढ़ने जाएँगे, हम,
शिक्षा को पाकर ही लेंगे दम।

सुमन शर्मा,
इं. प्रधानाध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय मांकरौल,
विकास खण्ड दृ इगलास,
जनपद–अलीगढ़।

बाल कविता–2

शिक्षण संवाद

जानवरों के अंग्रेजी नाम

Bear माने भालू
Deer माने हिरण
शिक्षा के प्रकाश
फूटेगी नई किरण

काट दिया कोट
बकरी तो है goat
सरकारी भूरी pant
हाथी है elephant

खूँटे से इसको खोलो
भैंस है buffalo
cat बोली मियाऊँ
गाय को बोलो cow

मीठा मीठा पेड़ा
Crab माने केकड़ा
पेड़ से गिरा पत्ता
Dog माने कुत्ता

मामा गये दिल्ली
Cat माने बिल्ली
झूठ बोलना है पाप
Snake माने साँप

बच्चे बने महान
Chameleon
गिरगिटान
कठोर होता hard
छिपकली है lizard

कसम गयी टूट
Camel माने ऊँट
Papaya है पपीता
Leopard माने चीता

हरी हरी साग
Tiger होता बाघ
गिलास किसने तोड़ा
Horse माने घोड़ा

हरी हरी बेर
Lion माने शेर
बैल होता Ox
लोमड़ी को बोलो Fox

बल्ला होता bat
चूहा होता rat
उड़ गए होश
Rabbit है खरगोश

बंदर होता monkey
करता है नौटंकी
चलो बाराबंकी
गधा होता donkey

चली है बयार
Jackal है सियार
कुम्हार है Potter
Python माने अजगर

असगर अली
प्राथमिक विद्यालय शुक्लापुर,
विकास खण्ड–रुदौली,
जनपद–अयोध्या।

बाल कविता–3

'नव सृजन'

गुब्बारों के गुच्छों जैसा, हर उपवन बन आया।
परियों के पंखों जैसी सुंदर,धरती की काया।
धरा पर सब कुछ सक्रिय, महसूस हो नवसृजन।
खग कलरव धूम मचाए, श्यामा करे अभिनन्दन।

भौंरे मंडराते फूलों पर, पुलकित हैं धरती–गगन।
रंग–बिरंगी तितलियाँ आतीं, छूने को ललचावे मन।
झिलमिल तारों जैसी दिखती, नभ में उड़ती पतंग।
डोरी भी झूमती चले, जैसे बच्चा माँ के संग।

नवपल्लव से भरी तरू, झुकी फूलों से लदी डाली।
आन्दमयी ऐसे, जैसे मेरे सपनों की छटा निराली।
लम्बे समय बाद, धरा का रूप निखरने चला।
मोहक यों प्रकृति की छटा, मानो मेरी चित्रकला।

'बसंत पंचमी' आती, होता 'सरस्वती –पूजन'।
रंग–बिरंगी 'होली'आती, 'शिवरात्रि'को व्रत–भजन।

मंद–सुगंधित पवन चले, हर्ष से भर दे मन।
वातावरण सुखद बनाता, ऋतुराज का नवसृजन।

अनिता नौडियाल,
सहायक अध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय मैखण्डी मल्ली,
विकास खण्ड–कीर्तिनगर,
जनपद–टिहरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड।

बाल कहानी

चने के दाने

शिक्षण संवाद

हमारे स्कूल की शिक्षिका अनीता अपने छात्रों के साथ नए–नए प्रयोग करती रहती थीं। एक बार वह क्लास में चने लेकर पहुँचीं सभी बच्चे उत्सुकतावश अपनी शिक्षिका को देखने लगे उन्हें लगा आज वह जरूर चने से कुछ सिखाएँगी। वह चने और सारे बच्चों को अपने साथ लेकर क्लास के बाहर बगीचे में पहुँची जहाँ कई बंदर रहते थे। चने देखकर बंदर टीचर की तरफ लपके टीचर ने सारे चने जमीन पर डाल दिए और बच्चों के साथ एक किनारे खड़े होकर तमाशा देखने लगीं। बंदरों ने जल्दी–जल्दी अपने दोनों हाथों में चने भरे और कूदकर पेड़ पर चढ़ गए। यह देखकर सभी बच्चे खिलखिला कर हँसने लगे। तभी पेड़ पर चढ़े एक बंदर के हाथ से एक चना नीचे गिर गया। कोई बंदर उसे उठा न ले यह सोचकर वह झट से नीचे उस एक चने की तरफ लपका लेकिन उस दाने के चक्कर में उसके हाथ से बाकी चने छूटकर गिर गए। वह बंदर बाकी बंदरों से झगड़ने लगा। सारे बच्चे मजे लेते रहे। फिर टीचर सबको वापस क्लास में ले गईं। क्लास में लौटकर टीचर ने बच्चों से पूछा तो आज आप लोगों ने क्या सीखा। सभी बच्चे एक–दूसरे का मुँह देखने लगे। बच्चों के जवाब न देने पर टीचर बोली असल में हम सबकी जिंदगी में उपलब्धियाँ चने के दानों के जैसी हैं हमारा पूरा जीवन इसी तरह चने के दाने इकट्ठा करते करते निकल जाता है। लेकिन इस दौड़ में हम अक्सर अपने हाथ में जो दाने है उसे नजरअंदाज कर देते हैं। उन दानों के लिए दौड़ते भागते हैं जो अपने हाथ में नहीं हैं। यानी अपना सारा धन व समय उन चीजों में व्यस्त करते रहते हैं जो हमारे पास नहीं हैं। हम यह नहीं सोचते कि जो हमारे पास है क्या हम उसका सही उपयोग कर भी रहे हैं या नहीं? वास्तव में हम सबकी मुट्ठी में कई खजाने छुपे रहते हैं। यह हम पर निर्भर करता है कि हम उन्हें पहचान पाते हैं या गँवा देते हैं। टीचर की बात सुनकर बच्चे अपनी शिक्षिका को आदर भाव से देखने लगे कि उन्होंने किस तरह छोटे से चने के दानों से जीवन की इतनी बड़ी सीख दी है कि जो आज हमारे पास है उसकी अहमियत को समझना जरूरी है।

ज्योति जैन,
सहायक अध्यापक,
जनपद–आगरा।

बाल साहित्य

वीर अब्दुल हमीद

शिक्षण संवाद

बच्चों में देशप्रेम की भावना जगाने के लिए आवश्यक है कि वे स्वतंत्रता संग्राम और सैनिकों से सम्बंधित साहित्य पढ़ें। ये साहित्य उनमें जोश जगाएगा, उमंग जगाएगा और देश के लिए कुछ कर गुजरने के लिए प्रेरित करेगा। गौरव सी सावंत द्वारा लिखित और सुधीर नाथ झा द्वारा अनुवादित ''अब्दुल हमीद'' एक ऐसी ही पुस्तक है। जो आपको देशप्रेम की भावना से लबरेज कर देती है। अब्दुल हमीद पहले दर्जी का काम करते थे लेकिन अपने एक मित्र को सैनिक की वर्दी में देखकर उन्हें लगा कि काश वो भी सैनिक होते। उन्होंने अपनी इच्छा माता–पिता को बतायी तो वे चिंतित हो गए और सोचा कि जल्द से जल्द अब्दुल का निकाह करके उसका ध्यान सेना में जाने से हटाया जा सकता है। लेकिन जिसे एक बार वर्दी की महत्ता समझ आ जाए उसके विचारों को कौन डिगा सकता है भला। अब्दुल हमीद ने अपनी पत्नी से सेना में जाने के लिए बात की तो पत्नी ने कहा कि मैं आपके साथ हूँ। बस फिर क्या था इस जुनूनी नौजवान ने भर्ती में अपना जौहर दिखाया और सेना में भर्ती हो गया। अब्दुल हमीद सेना में ग्रेनेडियर बने। पुस्तक में उल्लेख है कि इन्होंने एक जीप पर रखी तोपनुमा गन से लगभग 8 पाकिस्तानी टैंकों को उड़ाया। ये वास्तव में एक बहुत बड़ी बात है। कोई भारतीय ही इतनी वीरता और सूझबूझ का प्रयोग करके न्यूनतम संसाधनों में ऐसा कारनामा कर सकता है। इस पुस्तक में अनिमेश देबनाथ का चित्रांकन अद्भुत है। बच्चों को सेना में जाने के लिए प्रेरित करने और अपने देश के शूरवीरों से परिचित कराने के लिए इस पुस्तक को अपने पुस्तकालय में अवश्य सम्मिलित करना चाहिए।

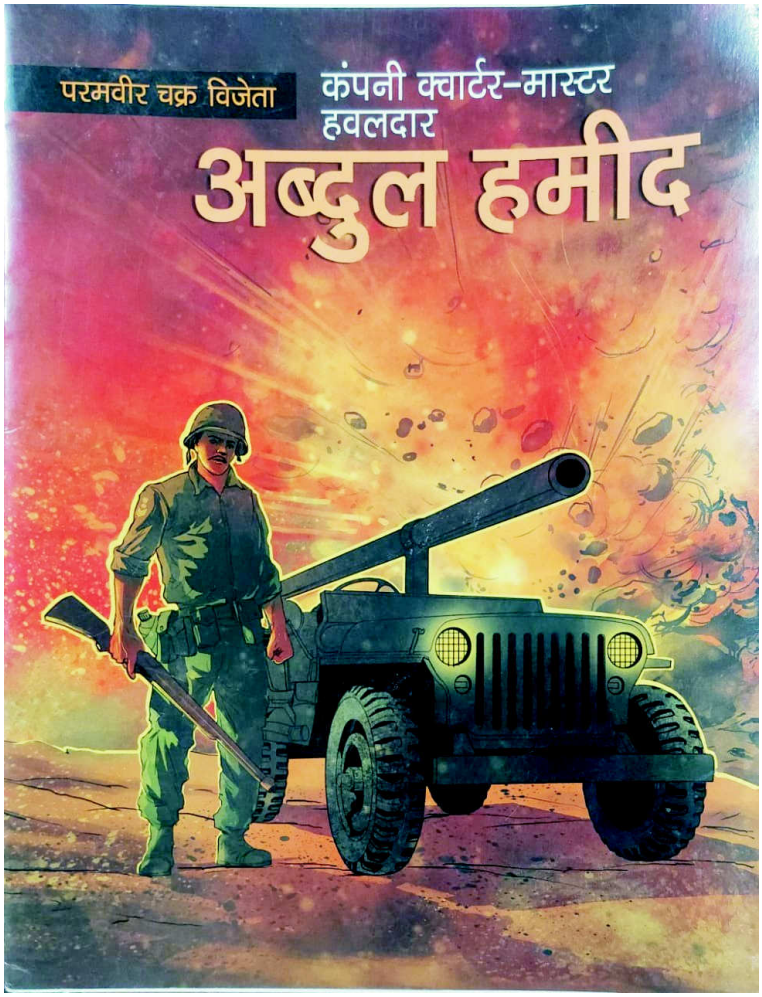

बात महिला शिक्षिकाओं की

घर बाहर के काम निभाऊँगी, बोली मेरी यह समझो

शिक्षण संवाद

वर्तमान समय में महिला ने यह सिद्ध कर दिया है कि वह घर और नौकरी दोनों के साथ सामंजस्य बैठाने में काफी हद तक सक्षम हुई है। अपनी योग्यता और सामर्थ्य के आगे किसी भी प्रकार की बाधा को आने नहीं देती है और विभिन्न अवरोधों को पार करते हुए अपनी शक्ति और क्षमता का बेहतर प्रदर्शन करती है। आज भौतिकवादी युग में भारतीय समाज का ढाँचा भी बदला है महिलाओं की अधिक संख्या में नौकरी के क्षेत्र में वृद्धि हुई है। महिला को आर्थिक स्वतंत्रता एवं उनके अंदर छिपी प्रतिभा को निखारने का अवसर प्रदान करने की स्वीकृति समाज ने भी दे दी है। भारतीय इतिहास भी गवाह है कि विदुषी महिलाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में अपना परचम लहराया है। ज्योतिबा फुले और मदर टेरेसा जैसी नारियों ने शिक्षा के माध्यम से व्यवसायीकरण का द्वार खोल दिया था जिन्होंने समर्पित होकर समाज को सेवा प्रदान की थी। रोजगार के हर क्षेत्र में आज महिलाएँ पुरुषों को अपना लोहा मनवा रही हैं। आज कामयाबी का दायरा बढ़ रहा है किंतु इसी के साथ दोहरी जिम्मेदारी निभाने में भी कुछ समस्याओं का सामना भी कर रही हैं।

कठिनाइयाँ – आज के समय में महिलाएँ शिक्षिका डॉक्टर इंजीनियर सेना आदि के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विभिन्न भूमिका निभा रही हैं किंतु उनको घर में भी बच्चों, बड़ों की देखभाल भी करनी होती है जिससे उनके स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। आज की प्रगतिशील नारी दो नावों की सवारी कर रही है जिससे कभी–कभी वह अधिक तनाव और थकान का भी शिकार हो जाती है। बदलते वक्त ने महिलाओं को आर्थिक शैक्षिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है और उनके सम्मान में भी वृद्धि हुई है। इनके बावजूद महिलाओं को घरेलू जिम्मेदारी खाना बनाना, घर को व्यवस्थित करना आदि में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। कार्य क्षेत्र और घर को सँभालने में कामकाजी महिलाओं को अधिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है। घर से दूर कार्यस्थल तक का सफर बड़ा ही सेहत पर विपरीत प्रभाव डालता है। जिससे महिलाएँ अनेक असाध्य बीमारियों जैसे– उच्च रक्तचाप, मोटापा, थायराइड, शुगर, अवसाद आदि का शिकार हो जाती हैं। कामकाजी महिलाएँ अपने स्वास्थ्य की देखभाल सही समय पर सही ढंग से नहीं कर पाती हैं और संतुलित भोजन भी ग्रहण करने का समय नहीं निकाल पाती हैं जिससे उनके स्वास्थ्य पर काफी विपरीत असर पड़ता है। स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए महिलाओं का स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए घर परिवार के सभी सदस्यों की यह जिम्मेदारी बनती है कि कामकाजी महिलाओं का पूरा– पूरा सहयोग करें।

इसीलिए सत्य ही कहा गया है कि

नारी एक, रूप अनेक।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली (1–8),
शिक्षा क्षेत्र– अमौली,
जनपद– फतेहपुर।

योग और चिकित्सा

शिक्षण संवाद

योग का शाब्दिक अर्थ है मिलना या जुड़ना। योग अक्सर असाध्य रोगों की चिकित्सा में भी सहायक होता है। योग के लाभों से प्रभावित होकर दूसरे देशों के लोग योग आश्रम भी खोल लिए हैं। योग चिकित्सा में न तो दवा देनी पड़ती है और न ही किसी भी तरह का धन खर्च करना पड़ता है।

मन की समस्त चंचल वृत्तियों पर विजय का नाम योग है। व्यक्ति जब मन की शुद्धता के साथ अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण पा लेता है तो फिर किसी भी प्रकार की आपत्ति और अंसतोष नहीं रहता। परन्तु आज के आधुनिक युग में समय के अभाव के कारण व्यक्ति अपने जीवन में वास्तविक सुख और शान्ति से दूर है। इस स्थिति में योग एक ऐसा साधन है जो किसी भी प्रकार की हीन भावना और संकोच से व्यक्ति को आत्मिक संतोष के प्रकाश की ओर ले जाता है।

योग के आठ अंग माने गए हैं और सभी स्वयं में अत्यन्त महत्वपूर्ण और उपयोगी हैं। चिकित्सा की दृष्टि से आसनों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है और बाकी सभी से उपयोगी भी।

1. शीर्षासन– सिर, शूल, कान और आँखों आदि रोगों के लिए लाभकारी होता है। बालों का सफेद होना और स्पॉट बाल्डनेस, चेहरे की झुर्रियों के उपचार हेतु भी लाभदायक सिद्ध होता है।

2. शवासन– तुतलाहट और सभी प्रकार की थकावट में उपयोगी होता है।

3. अर्ध चन्द्रासन–यकृत, प्लीहा, कुबड़ेपन और आँत सम्बन्धी बीमारी में लाभकारी होता है।

योग के आसन भी विभिन्न बीमारियों के उपचार में लाभकारी हैं। योग के चमत्कारी प्रभाव को अब पूरे विश्व द्वारा स्वीकार किया जा रहा है।

लुबना वसीम,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय सिविल लाईन,
विकास खण्ड–फीरोजाबाद,
जनपद–फीरोजाबाद।

स्नूकर एक खेल

शिक्षण संवाद

स्नूकर एक डंडे वाला खेल है जो एक बड़े हरे बनात से ढ़के हुए मेज पर खेला जाता है जिसके प्रत्येक चार कोने में और प्रत्येक लंबे लचीले किनारे के बीच में पॉकेट होते हैं। इसमें एक विधिवत (पूर्ण आकार का) 12 फीट × 6 फीट (3.7 मी० × 1.8 मी०) मेज होता है। इसे एक डंडे और स्नूकर गेंदोंः एक सफेद साँचाःळसवेंतल सपदा, 15 साँचाःळसवेंतल सपदा जिसमें से प्रत्येक का मान एक अंक होता है और साँचाःळसवेंतल सपदा पीले (2 अंक), हरे (3), भूरे (4), नीले (5), गुलाबी (6) और काले (7) रंगों की अलग–अलग छह गेंदों का प्रयोग करके खेला जाता है। डंडे वाली गेंद को साँचाःळसवेंतल सपदा लाल और रंगीन गेंदों के साथ प्रयोग करते हुए एक खिलाड़ी (या दल) अपने प्रतिद्वंदी के विरुद्ध अधिक अंक प्राप्त कर स्नूकर का एक फ्रेम साँचाःळसवेंतल सपदा (व्यक्तिगत खेल) जीतता है। जब एक निश्चित संख्या में फ्रेमों को जीत लिया जाता है तो एक खिलाड़ी मैच जीत जाता है।

स्नूकर, जिसे आमतौर पर भारत में ब्रिटिश सेना के अधिकारियों द्वारा आविष्कार किया हुआ माना जाता है, कई अंग्रेजी भाषी और राष्ट्रमंडल देशों में लोकप्रिय है जिसमें शीर्ष पेशेवर खिलाड़ी इस खेल से कैरियर की कमाई बहु–मिलियन पाउंड तक अर्जित करते हैं। यह खेल चीन में विशेष रूप से और बहुत ही लोकप्रिय हैं।

अर्चना शर्मा,
सहायक अध्यापिका,
कंपोजिट विद्यालय प्रेम विहार,
विकास खण्ड–लोनी,
जनपद–गाजियाबाद।

छात्रा का नाम-किन्जल
कक्षा–7

मण्डल स्तरीय कुश्ती प्रतियोगिता में प्रथम

रेनू, इं० प्रधानाध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय पपरेन्दा,
विकास खण्ड–अमौली,
जनपद–फतेहपुर।

Pinterest App

शिक्षण संवाद

वर्तमान प्रचलित शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक तकनीकी का अधिकाधिक प्रयोग हो रहा है जिससे शिक्षा को और अधिक रोचक बनाया जा सके। इसके लिए कई ऐप्स भी प्रयोग में लाए जा रहे हैं। ऐसे ही महत्वपूर्ण ऐप्स में से एक एप्प Pinterest App है, जिसमें विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ, क्राफ्ट और वर्कशीट्स को बहुत ही सरल और रचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें किसी भी प्रकार के कंटेंट को खोजा जा सकता है परन्तु शैक्षिक रूप में इसमें जो गतिविधियाँ या क्राफ्ट संबंधी चीजें हैं वो शिक्षकों के लिए बहुत उपयोगी हैं। गतिविधियों या क्राफ्ट संबंधी विषय को खोजने के लिए उस विषय को टाइप करके आसानी से खोजा जा सकता है। वर्कशीट्स के विषय को टाइप करने पर प्रत्येक स्तर तथा कक्षा के अनुरूप वर्कशीट्स उपलब्ध हो जाती है जिन्हें प्रिंट करके कक्षा में अभ्यास हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है। खेल संबंधी अनेक प्रकार की गतिविधियाँ भी इसपर आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं जिनसे शिक्षकों को उनके कार्य में सहायक सिद्ध होंगी।

दीपिका वर्मा,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मदरी प्रथम,
विकास खण्ड–अमौली,
जनपद–फतेहपुर।

प्रथम दिवस

राज्य स्तरीय शैक्षिक गुणवत्ता संवर्धन कार्यशाला काशी 2020

शिक्षण संवाद

बाबा भोलेनाथ की नगरी काशी में मिशन शिक्षण संवाद वाराणसी टीम एवं बेसिक शिक्षा विभाग वाराणसी के तत्वाधान में 25 दिसम्बर एवं 26 दिसम्बर को दो दिवसीय मिशन शिक्षण संवाद राज्यस्तरीय शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला का आयोजन जनपद वाराणसी के एडमिन श्रीमती सरिता रॉय एवं राज्य पुरस्कार प्राप्त श्री रविन्द्र कुमार सिंह जी द्वारा जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री राकेश कुमार सिंह जी के कुशल मार्गदर्शन में किया गया। कार्यशाला में पूरे प्रदेश से लगभग 200 सराहनीय, उत्कृष्ट एवं सकारात्मक प्रयास करने वाले अध्यापकों को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला की औपचारिक शुरुआत होने से पहले आये हुए समस्त आगन्तुक शिक्षक साथियों का नामांकनध्रजिस्ट्रेशन के साथ ही उन्हें पहचान पत्र एवं फोल्डर देकर टीका लगाकर स्वागत किया गया। नामांकन एवं स्वागत के उपरान्त सभी प्रतिभागियों को सुबह के नाश्ते के लिए आमन्त्रित किया गया।

नाश्ते के उपरांत सुबह 10 बजे से कार्यशाला की औपचारिक शुरुआत हुई। सर्वप्रथम जनपद वाराणसी के आदरणीय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री राकेश सिंह जी का बैण्ड बाजे के साथ स्वागत किया गया। स्वागत पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती देवी एवं भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। इसके पश्चात वाराणसी पब्लिक स्कूल की बच्चियों द्वारा सरस्वती वन्दना एवं योग प्रदर्शन की सराहनीय प्रस्तुति दी गयी। जनपद वाराणसी के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आदरणीय राकेश सिंह सर ने अपने सम्बोधन में मिशन शिक्षण संवाद की अवधारणा की सराहना करते हुए सरकारी बेसिक

शिक्षा के महत्व को स्वयं के उदाहरण द्वारा बेहतरीन ढंग से अपने ओजस्वी एवं प्रेरणादायी वक्तव्य में स्पष्ट किया कि किस प्रकार रियो ओलंपिक में उनके द्वारा राष्ट्रीय खो खो टीम को गाइड किया गया। कार्यशाला के प्रथम दिवस जनपद चन्दौली जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय आदरणीय भोलेन्द्र प्रताप सिंह का भी आगमन एवं स्वागत बैंडबाजे के साथ किया गया।

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी जनपद चन्दौली द्वारा अपने सारगर्भित सम्बोधन में गुरु की महत्ता को बेहतरीन ढंग से स्पष्ट करते हुए प्रतिभाग कर रहे शिक्षकों को इसी तरह कार्य करते रहने को प्रोत्साहित किया गया। तत्पश्चात विभिन्न जनपदों से आये हुए शिक्षकों द्वारा अपने–अपने जनपद के बेसिक शिक्षा विभाग का प्रस्तुतिकरण किया गया। वाराणसी पब्लिक स्कूल के छात्र द्वारा किया गया दीप योग ने सभी का मन मोह लिया। प्रथम दिवस के मुख्य अतिथि के रूप में विधायक अवधेश सिंह जी के द्वारा कार्यशाला में प्रतिभाग कर रहे वर्ष 2019 के रष्ट्रीय एवं राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों को स्मृति चिह्न देकर एवं शाल भेंट कर सम्मानित करने के साथ समस्त प्रतिभागियों का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया।

माननीय विधायक जी ने गुरु के महत्व को बताया। उन्होंने अपने उदबोधन में कहा कि शिक्षक होना ही अपने आपमे एक गर्व की बात है क्योंकि जितना सम्मान एक शिक्षक को जीवन पर्यन्त प्राप्त होता है उतना किसी भी पेशे में प्राप्त नही होता है। डायट प्राचार्य श्री उमेश शुक्ला जी ने भी अपने उदबोधन में मिशन शिक्षण संवाद एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय के

प्रयासों की जमकर प्रशंसा की।

इसके पश्चात सभी प्रतिभागियों को एक्सपोजर विजिट के अन्तर्गत कम्पोजिट विद्यालय लोहता, प्राथमिक विद्यालय सिहोरवां उत्तरी, कम्पोजिट विद्यालय ठठरा और कम्पोजिट विद्यालय ढ़ढोरपुर का विजिट कराया गया। कम्पोजिट विद्यालय लोहता में वाराणसी के जालान परिवार एवं विद्यालय के प्रधानाध्यापक द्वारा अंग वस्त्र एवं डायरी देकर एक बार पुनः सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। प्राथमिक विद्यालय सिहोरवा उत्तरी के विजिट के दौरान गाँव वालों द्वारा सभी शिक्षकों का बाजे के साथ माल्यार्पण के द्वारा स्वागत कर सभी का दिल जीत लिया। विजिट के दौरान कम्पोजिट विद्यालय ढढोरपुर भवन को देखकर कम्पोजिट विद्यालय के रूप में पहचानना मुश्किल हो रहा था क्योंकि भ्क्थ्ब बैंक के सहयोग से ये भवन लगभग 1.5 करोड़ की लागत से दो मंजिल बनाया गया है। इस विद्यालय के भ्रमण के साथ कब रात्रि के 10 बज गए पता ही नहीं चला।

विजिट से वापस आकर पूरे प्रदेश के शिक्षकों ने रात्रि के भोजन के पश्चात अपनी काव्यंजलि एवं संगीतमयी प्रस्तुति दी। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी वाराणसी आदरणीय राकेश सिंह सर की रात्रि में 12 बजे तक की उपस्थिति सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करती रही।

इस प्रकार कार्यशाला के प्रथम दिवस की समाप्ति हुई। टीम मिशन शिक्षण संवाद जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आदरणीय राकेश सिंह सर का ह्रदय से धन्यवाद देती है।

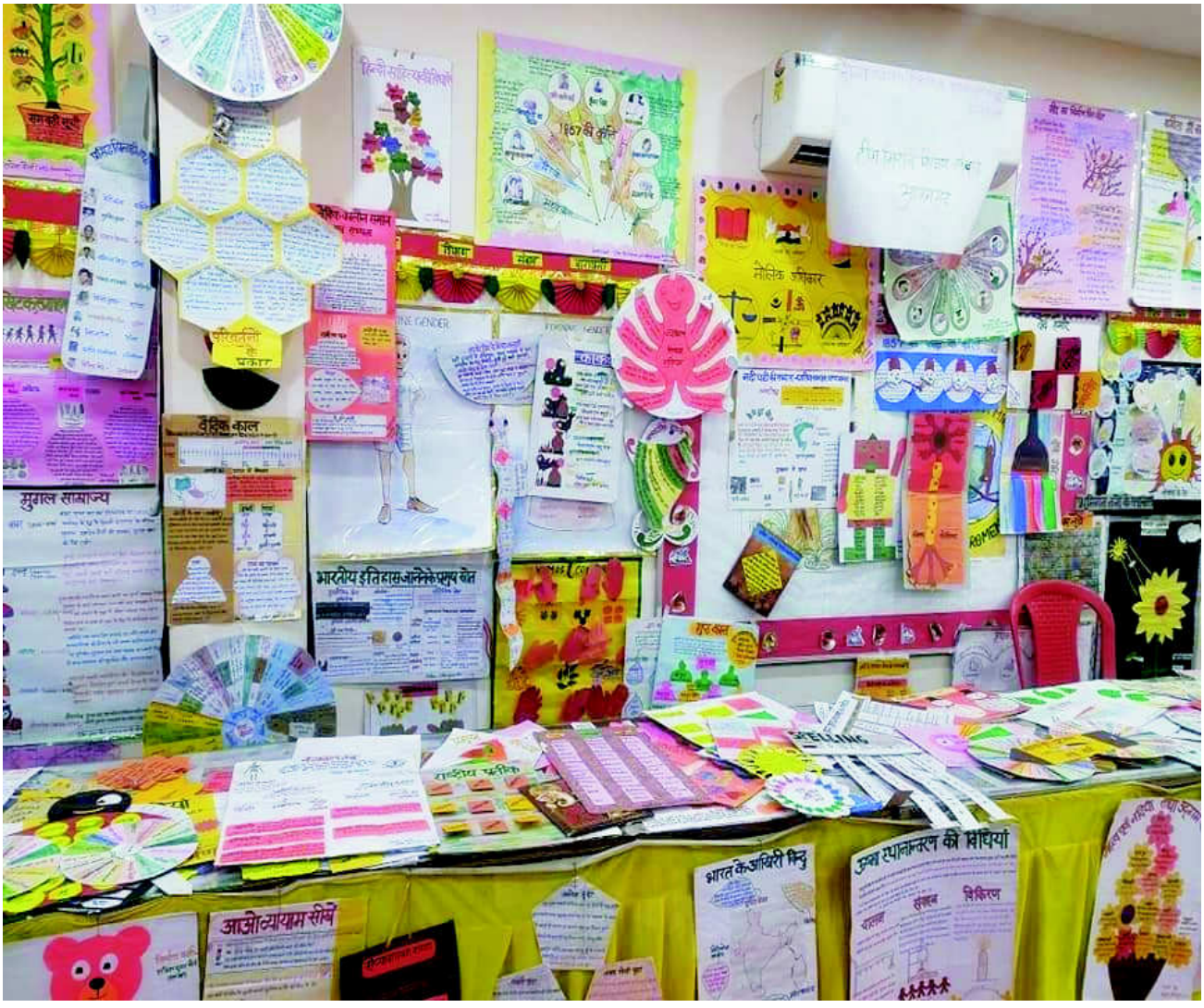

द्वितीय दिवस

राज्य स्तरीय शैक्षिक गुणवत्ता संवर्धन कार्यशाला काशी 2020

द्वितीय दिवस सभी प्रतिभागी 9 बजे तक कार्यक्रम स्थल आ चुके थे। जहाँ सुबह के नाश्ते के पश्चात द्वितीय दिवस शेष बचे हुए जनपदों के प्रतिभागियों की प्रस्तुति आरम्भ हुई। प्रस्तुतिकरण के दौरान ही द्वितीय दिवस के अतिथि विधायक राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार आदरणीय रविन्द्र जायसवाल जी का आगमन हुआ जिनका स्वागत वाराणसी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी महोदय राकेश सिंह जी ने किया। विधायक रवींद्र जायसवाल जी द्वारा विभिन्न जनपदों से आए प्रतिभागी शिक्षकों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। विधायक जी द्वारा सम्मानित होने के पश्चात प्रस्तुतिकरण पुनः शुरू हुआ। प्रस्तुतिकरण के दौरान जनपद सोनभद्र के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी आदरणीय गोरखनाथ पटेल जी का आगमन हुआ । प्रतिभागियों के प्रस्तुतिकरण पश्चात टीम मिशन शिक्षण संवाद के प्रणेता आदरणीय विमल कुमार जी द्वारा अपने सम्बोधन में सभी अध्यापकों को अपने प्रेरक सम्बोधन में षजितना जग से पाया मैंने, उससे अधिक मैं दे जाऊँष का सफल होने का एक मंत्र दिया गया। आदरणीय विमल सर के सम्बोधन के पश्चात विकासखण्ड आराजीलाइन के खण्ड शिक्षाधिकारी महोदय आदरणीय स्कंद गुप्ता जी द्वारा अपने सम्बोधन में सभी अध्यापकों को विद्यालय में नेतृत्व करने हेतु आगे आने का आह्वाहन किया गया। तत्पश्चात जनपद चित्रकूट से राजकुमार शर्मा जी द्वारा स्वरांजलि की संगीतमयी प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। जनपद गाजीपुर की ैत्ळ प्रीति सिंह जी द्वारा सुरीले अंदाज में मिशन गीत प्रस्तुत किया गया। इसी दौरान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री आदरणीय अनिल राजभर जी का आगमन हुआ। आदरणीय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सोनभद्र एवं वाराणसी द्वारा कैबिनेट मंत्री जी का स्वागत पश्चात सम्बोधन हुआ। अपने सम्बोधन में ठै। वाराणसी श्री

राकेश सिंह जी द्वारा कार्यशाला की दोनों दिन की हुई गतिविधियों से मंत्री जी को अवगत कराया गया। कैबिनेट मंत्री आदरणीय अनिल राजभर जी द्वारा सभी शिक्षकों को सरकारी स्कूल बेहतर बनाने की सरकार की पहल में साथ आने का आह्वाहन किया गया।

अंत मे कैबिनेट मंत्री श्री अनिल राजभर एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सोनभद्र श्री गोरखनाथ पटेल एवं वाराणसी श्री राकेश सिंह जी द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर एकबार पुनः सम्मानित किया गया। कार्यशाला के दौरान हाल के अंदर लगी ज्स्ड प्रदर्शनी ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा।

साभारः—
दीप नारायण मिश्रा, बबलू सोनी
संकलनः—
टीम मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-□□□□□□ □□□: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- □□□□□□ □□□□: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad):
https://twitter.com/shikshansamvad

5.□□-□□□□□:
https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात